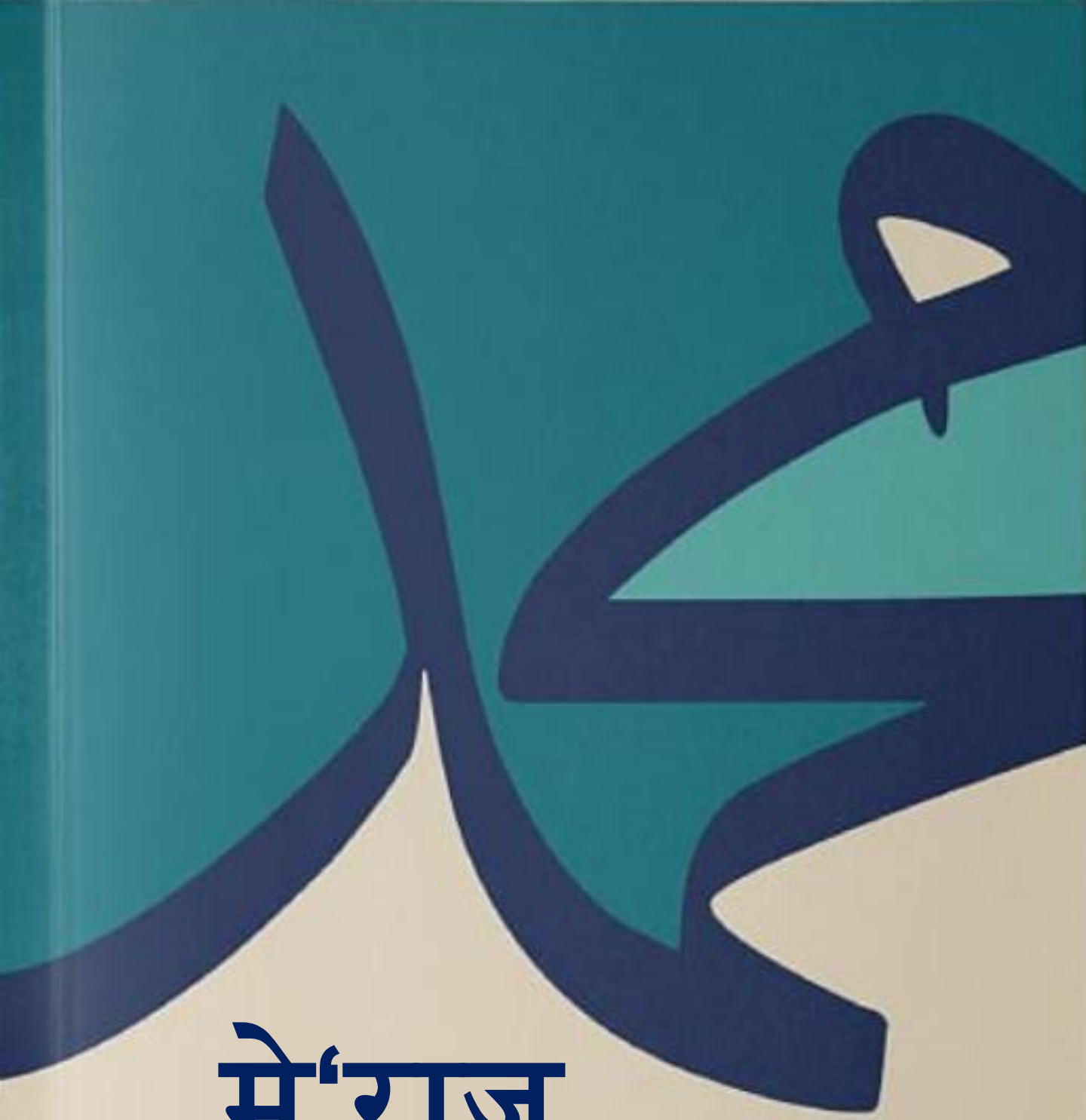

मे'राज

उरूज की मुबारक रात

मुल्ला फैज़ अल-कशानी
अंग्रेजी तर्जुमा - शेख सलीम भीमजी
हिंदी तर्जुमा - HindiDuas.org

HindiDuas.org

मे'राज : उरूज की मुबारक रात

मुल्ला फैज़ अल-कशानी

मज़मून	पेज न०
दीबाचा (प्रस्तावना)	3
मे'राज की क़ुरआनी बुनियाद	4
आसमानी सफ़र के पीछे की तारीख़	4
जिस्मानी उरूज (शारीरिक मे'राज)	5
तआरुफ़ (परिचय)	6
अहादीस — रिवायात	
हदीस नं. 1: उरूज (मे'राज) की शुरुआत की जगह	8
हदीस नं. 2: मे'राज का तरीक़ा	9
हदीस नं. 3: जहन्नम में एक पत्थर	11
हदीस नं. 4: हज़रत आदम	13
हदीस नं. 5: फ़रिश्ता-ए-मौत	14
हदीस नं. 6: हराम खाना खाने वाले लोग	15
हदीस नं. 7: दुआ करने वाला फ़रिश्ता	15
हदीस नं. 8: ग़ीबत करने वाले	16
हदीस नं. 9: यतीम का माल खाने वाले और सूद लेने वाले	16
हदीस नं. 10: बेहयाई करने वाली औरतें	17
हदीस नं. 11: फ़रिश्तों की तस्बीह	17
हदीस नं. 12: हज़रत यह्या और हज़रत ईसा	18
हदीस नं. 13: हज़रत यूसुफ़	19

हदीस नं. 14: हज़रत इदरीस	19
हदीस नं. 15: हज़रत हारून	20
हदीस नं. 16: बहुत लंबे क़द वाला आदमी	20
हदीस नं. 17: हिजामा (कपिंग) का हुक्म	21
हदीस नं. 18: हज़रत इब्राहीम	21
हदीस नं. 19: नूर और तारीकी की नदियाँ	22
हदीस नं. 20: एक हैरतअंगेज़ मख़लूक़	23
हदीस नं. 21: परों वाले फ़रिश्ते	23
हदीस नं. 22: बैतुल-मआमूर	24
हदीस नं. 23: सिदरतुल-मुन्तहा पर	25
हदीस नं. 24: इमाम जाफ़र सादिक़ का बयान	27
हदीस नं. 25: दुआ	27
हदीस नं. 26: अज़ान	28
हदीस नं. 27: नमाज़	30
हदीस नं. 28: मे'राज से वापसी	31
हदीस नं. 29: मे'राज में हज़रत अली की आवाज़	32

दीबाचा (प्रस्तावना)

इस्लाम के पैग़म्बर ﷺ ने अपनी तारीख़ी शबाना सफ़र (मे'राज) की शुरुआत अल्लाह की वह्यी के अमानतदार फ़रिश्ते, हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के साथ, उम्मे हानी के घर से की। उम्मे हानी, रसूलुल्लाह ﷺ के चचा की बेटी और अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम की बहन थीं। यह मुबारक शहर मक्का था। अल-बुराक़ नामी सवारी की मदद से आप ﷺ बैतुल मुक़द्दस पहुँचे, जो उस ज़माने में मुल्के उर्दुन (जॉर्डन) में वाक़े था और मस्जिदे अक़्सा के नाम से भी जाना जाता है।

वहाँ उतर कर आपने बहुत थोड़े वक़्त में मस्जिद के अंदर मौजूद मुख़्तलिफ़ मुक़ामात की ज़ियारत की, जिनमें बैतुल लहम भी शामिल था, जो हज़रत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की पैदाइश की जगह है। इसके अलावा आपने दूसरे अंबिया अलैहिमुस्सलाम के घरों और अहम मुक़ामात की भी ज़ियारत फ़रमाई। कुछ मुक़ामात पर आपने दो रकअत नमाज़ भी अदा फ़रमाई।

अगले मरहले में आप ﷺ आसमानों की तरफ़ रवाना हुए, जहाँ आपने आसमानी अजसाम और पूरी कायनात का मुशाहिदा किया। आपने पहले अंबिया की रूहों और फ़रिश्तों से कलाम किया, जन्नत और जहन्नम को क़रीब से देखा और वहाँ रहने वालों के दर्जात और मरातिब का मुआयना किया। तख़लीक़ के ये अनजाने राज़, कायनात की शुरुआत के असरार, आलमे तख़लीक़ की वुसअत और अल्लाह तआला की बे-इंतिहा क़ुदरत — इन सब का आपको मुकम्मल इल्म अता किया गया।

इसके बाद आप ﷺ सफ़र जारी रखते हुए उस मुक़ाम तक पहुँचे जिसे सिदरतुल मुन्तहा कहा जाता है, जो जलाल और अज़मत से ढका हुआ था। इसी रास्ते से आप ﷺ वापस लौटे, दोबारा बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ लाए, फिर मक्का पहुँचे और अपने घर वापस आए।

वापसी के सफ़र में आपने क़ुरैश के एक तिजारती क़ाफ़िले को देखा, जिसका एक ऊँट गुम हो गया था और वे उसे तलाश कर रहे थे। आपने क़ाफ़िले के पानी में से पानी पिया और सुबह की रोशनी फैलने तक उम्मे हानी के घर पहुँच गए।

वापसी पर रसूलुल्लाह ﷺ ने उम्मे हानी को अपने देखे हुए राज़ बताए और उसी शाम क़ुरैश की एक महफ़िल में मे'राज के तमाम असरार बयान कर दिए। यह बात जल्द ही हर तरफ़ फैल गई और क़ुरैश पहले से ज़्यादा नाराज़ हो गए।

क़ुरैश ने अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ रसूल ﷺ को झुठलाया। मजलिस में एक शख़्स खड़ा हुआ और पूछा कि क्या मक्का में कोई ऐसा है जिसने बैतुल मुक़द्दस देखा हो ताकि वह रसूल ﷺ से उसकी इमारत के बारे में सवाल करे। रसूल ﷺ ने न सिर्फ़ उसकी बनावट की मुकम्मल तफ़सील बयान की बल्कि मक्का

और बैतुल मुक़द्दस के दरमियान पेश आने वाले वाक़िआत भी बताए। कुछ ही अरसे बाद क़ाफ़िले के मुसाफ़िरों ने उन्हीं बातों की तस्दीक़ कर दी।

मे'राज की क़ुरआनी बुनियाद

इस्लाम के पैग़म्बर ﷺ की आसमानी सफ़र का ज़िक्र क़ुरआन की दो सूरतों में साफ़ तौर पर मौजूद है और दूसरी सूरतों में भी इसकी तरफ़ इशारे मिलते हैं।

सूरतुल इसरा (सूरह 17) में इरशाद होता है:

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

"पाक है वह ज़ात जो अपने बंदे को रात के वक़्त मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गई, जिसके चारों तरफ़ हमने बरकत रखी है, ताकि हम उसे अपनी निशानियाँ दिखाएँ। बेशक वह सुनने वाला, देखने वाला है।"

इस आयत से साबित होता है कि रसूल ﷺ ने यह सफ़र जिस्म और रूह दोनों के साथ तय किया और अल्लाह की छुपी हुई क़ुदरत से बहुत थोड़े वक़्त में यह सफ़र पूरा हुआ।

अल्लाह तआला ने "सुब्हान" से कलाम शुरू किया, जो उसकी पाकीज़गी और कमाल की तरफ़ इशारा करता है, और फिर "अस्रा" फ़रमा कर यह साफ़ कर दिया कि यह सफ़र आम दुनियावी असबाब से नहीं बल्कि उसकी ख़ास क़ुदरत से हुआ।

मे'राज की तारीखी पृष्ठभूमि

मे'राज की तारीख़ के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात मिलती हैं। इब्ने इसहाक़ और इब्ने हिशाम के मुताबिक़ यह वाक़िआ बिअसत के दसवें साल हुआ, जबकि बैहक़ी ने इसे बारहवें साल का बताया है। कुछ ने इसे शुरूआती दौर का वाक़िआ कहा है।

हालाँकि इसमें कोई शक नहीं कि जिस मे'राज में पाँच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की गई, वह हज़रत अबू तालिब की वफ़ात से पहले हुई, यानी बिअसत के दसवें साल से पहले।

जिस्मानी मे'राज

सदियों से यह बहस जारी रही है कि मे'राज जिस्मानी थी या सिर्फ़ रूहानी। क़ुरआन और हदीस की रोशनी में इसमें कोई शक नहीं कि यह जिस्मानी सफ़र था।

कुछ लोगों ने साइंस की वजह से इसे रूहानी या ख़्वाब क़रार देने की कोशिश की, मगर क़ुरैश का रवैया साफ़ बताता है कि यह ख़्वाब नहीं था, वरना इतना हंगामा न होता।

आज की साइंसी तरक़्क़ी — जैसे रॉकेट, अंतरिक्ष यात्रा और ग्रहों की खोज — यह साबित करती है कि ऐसा सफ़र नामुमकिन नहीं। जो काम आज इंसान मशीनों से करता है, अंबिया अलैहिमुस्सलाम अल्लाह की क़ुदरत से बिना ज़ाहिरी असबाब के करते थे।

नतीजा

मे'राज रसूल ﷺ अल्लाह तआला की बे-इंतिहा क़ुदरत की ज़िंदा दलील है। जिस ज़ात ने क़ायनात को पैदा किया, वही उसके क़वानीन को रोकने और बदलने पर भी क़ादिर है। अल्लाह की क़ुदरत का इंसानी क़ुदरत से कोई मुक़ाबला नहीं।

हवाले

हौज़ा इल्मिया क़ुम
महदी अंसारी क़ुम्मी
सन 1376 हिजरी शम्सी (1997)

1. सूरह अल-इसरा (17), आयत 1
2. सूरह अन-नज्म, आयात 12–18
3. नवादिरुल अख़बार — फ़ैज़ अल-काशानी

इब्तिदा (परिचय)

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين بارئ الخلائق أجمعين وصلى الله على سيدنا محمد وأل بيته الطيبين الطاهرين سيّما الإمام المنتظر المهديّ صاحب الزمان عليه أفضل التحية والسلام واللعن الدائم على أعدائهم أجمعين إلى يوم الدين.

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह के लिए हैं, जो तमाम जहानों का परवरदिगार और सारी मख़लूक़ात का पैदा करने वाला है। और दुरूद व सलाम हों हमारे आका हज़रत मुहम्मद ﷺ और उनकी पाक और पाकीज़ा आल पर, ख़ास तौर पर इमामे मुंतज़िर, हज़रत महदी साहिबुज़्ज़मान अलैहिस्सलाम पर। उन पर बेहतरीन सलाम और दुआएँ हों, और उनके तमाम दुश्मनों पर क़ियामत तक की दाइमी लानत हो।

इसके बाद, अल्लाह तआला ने अपनी अज़ीम और मुबारक किताब में फ़रमाया है:

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

“पाक है वह ज़ात जो अपने बंदे को रात के वक़्त मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गई, जिसके चारों तरफ़ हमने बरकत अता की है, ताकि हम उसे अपनी निशानियाँ दिखाएँ। बेशक वही सब कुछ सुनने वाला और देखने वाला है।”

हमारे अज़ीमुश्शान नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ की ज़िंदगी में पेश आने वाले रूहानी और रूह को सुकून देने वाले वाक़िआत में से एक अहम वाक़िआ मे‘राज है। यह वाक़िआ तारीख़ के उन मुसल्लमा हक़ाइक़ में से है जिनमें किसी क़िस्म का शक नहीं, और यह हमारे दीनी अक़ीदे का अहम हिस्सा है।

हर मुसलमान, क़ुरआन की साफ़ आयात और तारीख़ की मो'तबर रिवायतों की बुनियाद पर, मे'राज पर ईमान रखता है।

शिया तालीमात में भी मे'राज पर ईमान उसूले अक़ाइद में शामिल है। जैसा कि इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद अस्सादिक़ अलैहिस्सलाम और इमाम अली बिन मूसा अर्रज़ा अलैहिस्सलाम से रिवायत है कि:

.من أنكر ثلاثة أشياء فليس من شيعتنا – المعراج – المسئلة في القبر والشفاعة

"जो शख़्स इन तीन चीज़ों में से किसी एक का इंकार करे, वह हमारे शियाओं में से नहीं है: मे'राज, क़ब्र में सवाल-जवाब और शफ़ाअत।"

यह किताब जो आपके हाथों में है, आख़िरी नबी ﷺ के मे'राज के वाक़िआ पर मुश्तमिल है, जिसे इस हक़ीर बंदे ने मुख़्तलिफ़ किताबों, अहादीस और मो'तबर तारीखी वाक़िआत से तहक़ीक़ के बाद एक रिसाले की सूरत में जमा किया है।

इसको मुख़्तसर रखने का मक़सद यह था कि अब तक उस अज़ीम शख़्सियत (हज़रत मुहम्मद ﷺ) के मे'राज को एक जामे', मुख़्तसर और फ़ायदेमंद अंदाज़ में पेश नहीं किया गया था। उम्मीद है कि अज़ीज़ क़ारीन क़लम की ग़लतियों और कोताहियों को माफ़ फ़रमाएँगे।

.وعلى الله الإتكال وهو حسبي ونعم الوكيل نعم المولى ونعم المصير

और मैं अल्लाह ही पर भरोसा करता हूँ, वही मेरे लिए काफ़ी है और वही सबसे बेहतरीन कारसाज़ है, वही सबसे अच्छा मालिक और सबसे बेहतरीन अंजाम देने वाला है।

मुहम्मद फ़ैज़ अल-काशानी

हदीस नं. 1: मे'राज़ का इब्तिदाई मुक़ाम

الإسراءوالمعراج

तारीख़ लिखने वालों और क़ुरआन-ए-मजीद के मुफस्सिरीन के दरमियान इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि नबी-ए-करीम ﷺ की मे'राज़ कहाँ से शुरू हुई। क्या यह उम्मे हानी (जो अमीरुल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब अलैहिस्सलाम की बहन थीं) के घर से शुरू हुई, या मस्जिदुल हराम से—क्योंकि उस वक़्त पूरा शहर मक्का भी "मस्जिदुल हराम" के नाम से जाना जाता था? ज़ाहिरी तौर पर आयत की तिलावत से मालूम होता है कि यह सफ़र "मस्जिदुल हराम" से शुरू हुआ। पस, अल्लाह के रसूल ﷺ का मे'राज़ी सफ़र मस्जिदुल हराम से मस्जिदुल अक़्सा—यानी बैतुल मुक़द्दस—तक था।

سبحان الذي أسرى

यह सफ़र—यानी नबी-ए-करीम ﷺ का मे'राज़—रात के वक़्त हुआ, और "मस्जिदुल अक़्सा" (दूर वाली मस्जिद) का मतलब भी वही है जो "बैतुल मुक़द्दस" है।

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाता है:

أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ {12} وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ {13} عِندَ سِدْرَةِ الْمُنتَهَىٰ {14} عِندَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ {15} إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ {16} مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ {17} لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ {18}

अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है।

"क़सम है ढलते हुए सितारे की। तुम्हारा साथी न तो गुमराह हुआ और न भटका। वह अपनी ख़्वाहिश से कुछ नहीं कहता; यह तो वही है जो वह्ी की जाती है। उसे सिखाया उस ज़बरदस्त (फ़रिश्ते) ने, जो क़ुव्वत वाला है, जो ऊँचे किनारे पर ज़ाहिर हुआ। फिर वह नज़दीक आया, फिर और नज़दीक हुआ, यहाँ तक कि वह दो कमानों के फ़ासले जितना—बल्कि इससे भी क़रीब—हो गया। फिर अल्लाह ने अपने बंदे पर जो चाहा वह वह्ी की। (मुहम्मद ﷺ का) दिल उस चीज़ में झूठा नहीं था

जो आँखों ने देखा। क्या तुम उससे उस चीज़ पर झगड़ते हो जो उसने देखी? बेशक उसने उसे दूसरी बार भी देखा, सिदरतुल मुन्तहा के पास, जिसके पास जन्नतुल-मअवा है। जब सिदरा पर वह ढकाव छा गया जो छा गया। न निगाह चूकी और न हद से बढ़ी। बेशक उसने अपने रब की सबसे बड़ी निशानियाँ देखीं।" 1

हदीस नं. 2: मे'राज़ का तरीक़ा

कुछ लोग कहते हैं कि नबी ﷺ का मे'राज़ नींद की हालत में हुआ, और कुछ कहते हैं कि यह सिर्फ़ रूहानी था। लेकिन नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया कि "मे'राज़ में मैं मुख़्तलिफ़ अंबिया से मिला; मैंने फ़रिश्तों को देखा; मुझे जन्नत और जहन्नम दिखाए गए; मुझे अर्श तक ले जाया गया और मैं सिदरतुल मुन्तहा तक पहुँचा; मैंने जन्नत वालों को देखा जिन पर अल्लाह की नेमतें बरस रही थीं, और मैंने जहन्नम वालों को भी देखा जिन पर सख़्त से सख़्त अज़ाब हो रहा था; और मुझे यह भी बताया गया कि वे इस हालत में क्यों हैं।"

तो (कुछ लोगों के गुमान के मुताबिक़) मिट्टी से बने जिस्मानी बदन के साथ इन मराहिल से गुजरना मुमकिन नहीं—(यह दावा/गुमान उन्होंने किया), इसलिए उन्होंने इसे जिस्मानी मानने से इंकार किया।

अली बिन इब्राहीम अल-क़ुम्मी से रिवायत है कि इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद अस्सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"जिब्राईल, मीकाईल और इस्राफ़ील ने बुराक़ 2 को नबी ﷺ के पास लाया। इन तीनों में से एक ने बुराक़ की लगाम पकड़ी, दूसरे ने ज़ीन को थामा, और तीसरे ने नबी ﷺ के कपड़े को पकड़ रखा जब आप उस पर सवार हो रहे थे। जब नबी ﷺ बुराक़ पर सवार हुए तो बुराक़ का पूरा बदन काँप उठा। जिब्राईल ने हाथ से इशारा करके बुराक़ से कहा: 'ऐ बुराक़! सुकून पकड़! नबी ﷺ से पहले किसी नबी ने तुझ पर सवारी नहीं की, और उनके बाद भी कोई ऐसा नहीं आएगा जो तुझ पर सवारी करे।'"

फिर बुराक़ शांत हो गया और नबी ﷺ को आसमानों की तरफ़ ले चला। जिब्राईल नबी ﷺ के साथ रहे और आसमान व ज़मीन में अल्लाह की निशानियाँ दिखाते रहे।

नबी-ए-इस्लाम ﷺ ने फ़रमाया: "हम चलते रहे कि मैंने किसी को सुना जो मुझे नाम लेकर पुकार रहा था। मैंने उसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया और रास्ते पर चलता रहा। फिर दूसरी बार किसी और

ने मुझे नाम लेकर पुकारा; मैंने फिर भी ध्यान नहीं दिया। फिर मैंने एक औरत को देखा जिसके बाज़ू खुले हुए थे और दुनिया की तमाम रौनकें उसके साथ थीं। उसने कहा: 'ऐ मुहम्मद! ठहर जाइए, मुझे आपसे कुछ कहना है।' मगर मैंने उसकी तरफ़ भी ध्यान नहीं दिया। फिर मैंने एक और आवाज़ सुनी जो मुझे बहुत डराने वाली लगी; मैंने उसे भी नज़रअंदाज़ किया।"

"कुछ देर बाद जिब्राईल रुके और मुझसे कहा: 'नमाज़ पढ़िए।' मैं बुराक़ से उतरा और नमाज़ अदा की। जिब्राईल ने कहा: 'क्या तुम जानते हो तुमने कहाँ नमाज़ पढ़ी?' मैंने कहा: 'नहीं।' उन्होंने कहा: 'यह तैय्यिबा (मदीना) है, वही जगह जहाँ तुम्हारे मुसाफ़िर पहुँचा करेंगे।' फिर मैं बुराक़ पर सवार हुआ और हम आगे बढ़े।"

"फिर जिब्राईल ने हमें फिर रोका और कहा: 'नमाज़ पढ़िए।' मैं उतरा और वहाँ नमाज़ अदा की। उन्होंने पूछा: 'क्या तुम जानते हो यह कहाँ है?' फिर कहा: 'यह तूरे सैना है—वही जगह जहाँ हज़रत मूसा ने अल्लाह से कलाम किया।'"

"फिर मैं बुराक़ पर सवार हुआ और आगे बढ़ता रहा यहाँ तक कि अल्लाह जो चाहे। थोड़ी देर बाद जिब्राईल ने कहा: 'उतरिए और नमाज़ पढ़िए।' फिर पूछा: 'क्या तुम जानते हो कहाँ नमाज़ पढ़ी?' मैंने कहा: 'नहीं।' उन्होंने कहा: 'यह बैतुल लहम है—बैतुल मुक़द्दस के क़रीब—और यही वह जगह है जहाँ हज़रत ईसा पैदा हुए।'"

हम बैतुल मुक़द्दस पहुँचे। मैंने बुराक़ की लगाम उसी हलक़े में बाँधी जहाँ मुझसे पहले अज़ीम अंबिया अपनी सवारियों को बाँधते थे। फिर मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ। वहाँ मेरी मुलाक़ात इब्राहीम, मूसा, ईसा और दूसरे तमाम अंबिया से हुई। सब मेरे इर्द-गिर्द जमा हुए और हम नमाज़ के लिए तैयार हुए। मुझे गुमान था कि इमामत जिब्राईल करेंगे, लेकिन जब सफ़ें बँधने लगीं तो जिब्राईल ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और मुझे आगे बढ़ा दिया।

जिब्राईल भी मेरे पीछे नमाज़ में शामिल हुए और मुख़्तलिफ़ अंबिया भी मेरे पीछे थे; मगर इससे मेरे दिल में कोई गुरूर पैदा नहीं हुआ। इसके बाद मस्जिद के ख़ादिम ने मेरे सामने तीन बरतन पेश किए: एक में दूध, दूसरे में पानी और तीसरे में शराब। अचानक मैंने किसी को कहते सुना: 'अगर उसने पानी लिया तो वह हलाक होगा और उसकी उम्मत भी हलाक होगी। अगर शराब ली तो वह और उसकी उम्मत गुमराह हो जाएंगे। मगर अगर दूध पिया तो वह खुद भी हिदायत पाएगा और उसकी उम्मत भी हिदायत पाएगी।'

मैंने दूध वाला बरतन लिया और उससे पी लिया। जिब्राईल ने कहा: 'जान लो, तुम हिदायत पा गए और तुम्हारी उम्मत भी हिदायत पा गई।'"

फिर मुझसे पूछा गया: "सफ़र में तुमने क्या देखा?" मैंने कहा: "मेरी दाईं तरफ़ से किसी ने मुझे पुकारा।" जिब्राईल ने पूछा: "क्या तुमने जवाब दिया?" मैंने कहा: "नहीं।" उन्होंने कहा: "वह यहूदी था। अगर तुम जवाब देते तो तुम्हारे बाद तुम्हारी उम्मत यहूदियत की तरफ़ मुड़ जाती।"

फिर जिब्राईल ने पूछा: "और क्या देखा?" मैंने कहा: "मैंने बाईं तरफ़ देखा, वहाँ से भी किसी ने मुझे पुकारा।" उन्होंने पूछा: "क्या तुमने जवाब दिया?" मैंने कहा: "नहीं।" उन्होंने कहा: "वह नसरानियत की तरफ़ बुलाने वाला था। अगर तुम ध्यान देते तो तुम्हारे बाद तुम्हारी उम्मत ईसाइयत की तरफ़ चली जाती।"

फिर जिब्राईल ने पूछा: "तुम्हारा इस्तिक़बाल किसने किया?" मैंने कहा: "मैंने एक औरत को देखा जिसके बाज़ू खुले थे और उस पर दुनिया की रौनकें थीं। उसने कहा: 'ऐ मुहम्मद! मेरे क़रीब आइए ताकि मैं आपसे बात करूँ।'"

जिब्राईल ने पूछा: "क्या तुमने उससे बात की?" मैंने कहा: "नहीं।"

उन्होंने कहा: "वह दुनिया की जिस्मानी सूरत थी। अगर तुम उससे बात करते तो तुम्हारी उम्मत आख़िरत पर दुनिया को तरजीह देने लगती।"

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 319–320, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 3: जहन्नम में एक पत्थर

मैंने कहा: "इसके बाद मैंने एक ऐसी आवाज़ सुनी जो मुझे बहुत ज़्यादा डराने वाली लगी। जब मैंने पूछा कि यह क्या है, तो जवाब मिला: 'यह आवाज़ उस पत्थर की है जिसे सत्तर साल पहले जहन्नम की आग में फेंका गया था, और अभी-अभी वह अपने ठिकाने पर जाकर टिक गया है।'"

कहा गया है कि उस वक़्त के बाद से रसूल ﷺ को ज़िंदगी भर हँसते हुए नहीं देखा गया।

"हम ऊपर की तरफ़ सफ़र करते रहे यहाँ तक कि दुनिया के ऊपरी तबक़े (ऊपरी फज़ा) तक पहुँच गए। वहाँ मैंने 'इस्माईल' नाम के एक फ़रिश्ते को देखा। वह 'ख़ित्फ़ा' का निगहबान था, जिसके बारे में क़ुरआन-ए-मजीद यूँ बयान करता है:

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ

‘उनमें से जो चोरी-छिपे (आसमान की बातें) उचक ले, तो एक चमकदार शोला उसके पीछे लगाया जाता है।’ 3

“इस्माईल की निगरानी में सत्तर हज़ार फ़रिश्ते थे, और उन सत्तर हज़ार में से हर एक के तहत फिर सत्तर हज़ार और फ़रिश्ते थे। इस्माईल ने जिब्राईल से पूछा: ‘तुम्हारे साथ यह कौन शख़्स है?’ जवाब दिया गया: ‘यह मुहम्मद हैं, जिन्हें पैग़ाम के साथ (ऊपर) उठाया गया है।’”

“उस फ़रिश्ते ने दरवाज़ा खोला और हम आसमान में दाख़िल हो गए। मैंने उसे सलाम किया और उसके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। उसने भी मुझे सलाम किया और मेरे लिए रहमत की दुआ की। उसने कहा: ‘ख़ुश आमदी, ऐ भाई! और ऐ अज़ीम नबी!’”

“उस वक़्त फ़रिश्तों का एक गिरोह मेरे इस्तिक़बाल के लिए आया। सब मुस्कुरा रहे थे और ख़ुश थे—सिवाय एक फ़रिश्ते के जिसकी सूरत बहुत भयानक थी (जिसका नाम ‘ख़ाज़िन’ है), वह ग़मगीन था और रो रहा था। उसके चेहरे पर ख़ुशी की कोई अलामत नहीं थी।”

“हम उसके हाल से हैरान थे। जिब्राईल ने कहा: ‘यह वही फ़रिश्ता है जो जहन्नम की आग भड़काने वाला है। जब से अल्लाह तआला ने उसे इस काम पर मुक़र्रर किया है, वह कभी मुस्कुराया नहीं। हर रोज़ अल्लाह के दुश्मनों और गुनाहगारों पर उसका ग़ज़ब बढ़ता जाता है। इसी के ज़रिए अल्लाह तआला गुनाहगारों को सज़ा देगा। अगर उसके चेहरे पर मुस्कान लिखी जा सकती, तो वह तुम्हारी वजह से होती—मगर न वह पहले कभी मुस्कुराया, न अब, न तुमसे पहले और न तुम्हारे बाद।’”

“मैंने उसे सलाम किया; उसने मेरे सलाम का जवाब दिया और मुझे जन्नत की खुशख़बरी दी।”

ख़ाज़िन ने कहा: ‘क्या आप इजाज़त देते हैं कि मैं आपको जहन्नम की आग दिखाऊँ?’
जिब्राईल ने कहा: ‘हाँ, नबी को जहन्नम की आग दिखाओ।’
ख़ाज़िन ने जहन्नम के ऊपर का पर्दा उठाया और दरवाज़ा खोल दिया। आग की लपटें आसमान की तरफ़ उठने लगीं—ऐसी उबलती और लगातार ऊपर उठती हुई कि मुझे लगा अब ये मेरे क़रीब आ जाएँगी। मैंने कहा: ‘जिब्राईल! फ़रिश्ते से कहिए कि आग ढँक दे।’
जिब्राईल ने हुक्म दिया, तो आग अपनी जगह लौट गई और ख़ाज़िन ने जहन्नम के दरवाज़े बंद कर दिए।”

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 320–321, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 4: हज़रत आदम

“जिब्राईल और मैं आगे बढ़ते रहे। रास्ते में हम एक ताक़तवर और मज़बूत जिस्म वाले शख़्स से मिले। मैंने पूछा: ‘यह कौन हैं?’
जिब्राईल ने जवाब दिया: ‘यह तुम्हारे वालिद, हज़रत आदम—अबुल-बशर हैं।’”

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद का तआरुफ़ मुझे कराया और कहा: “तुम्हारे पाक जिस्म से बहुत ख़ुशबू आ रही है।”
मैंने उनके सामने यह आयात पढ़ीं:

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ {18} وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ {19} كِتَابٌ مَرْقُومٌ {20} يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ {21}

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ {22} عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ {23} تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ {24} يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْتُومٍ {25} خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ {26} وَمِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ {27} عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ {28}

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
“हरगिज़ नहीं! नेक लोगों का आमाल-नामा यक़ीनन ‘इल्लिय्यीन’ में है। और तुम्हें क्या मालूम ‘इल्लिय्यीन’ क्या है! वह एक लिखी हुई किताब है, जिसे मुक़र्रबीन (अल्लाह के क़रीबी) देखते हैं। बेशक नेक लोग नेमतों में होंगे, तख़्तों पर टिके हुए देख रहे होंगे। तुम उनके चेहरों पर नेमतों की ताज़गी पहचान लोगे। उन्हें मुहरबंद पाक शराब पिलाई जाएगी, जिसकी मुहर कस्तूरी होगी; और इसी के लिए चाहने वालों को आगे बढ़ना चाहिए। और उसकी मिलावट ‘तसनीम’ से होगी—एक चश्मा जिससे मुक़र्रबीन पीते हैं।” 4

मैंने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सलाम किया और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। उन्होंने भी मुझे सलाम किया, मेरे लिए मग़फ़िरत की दुआ की और कहा:
“ख़ुश आमदी, ऐ नबी! और ऐ नेक औलाद, जिसे अच्छे वक़्त में भेजा गया।”

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 321–322, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 5: मलकुल-मौत (फ़रिश्ता-ए-मौत)

"हम आगे बढ़ते रहे, यहाँ तक कि हमने एक फ़रिश्ते को बैठे हुए देखा। उसके हाथ में नूर (रौशनी) की एक तख़्ती (लोहे/पट्टी) थी। वह तख़्ती में लिखी हुई बातों को उदासी और मलाल के साथ देख रहा था, और अपने आसपास होने वाली चीज़ों की तरफ़ बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा था—सिवाय इसके कि कोई उसके क़रीब आ जाए।"

मैंने जिब्राईल से पूछा: "यह कौन फ़रिश्ता है?"
जिब्राईल ने कहा: "यह मलकुल-मौत (मलिकुल-मौत) है, और यह रूहें क़ब्ज़ करने में मशग़ूल है।"
मैंने कहा: "मुझे इसके क़रीब ले चलिए।"

हम उसके क़रीब गए। जिब्राईल ने मेरा तआरुफ़ कराया। मैंने उसे सलाम किया। उसने मेरा इस्तिक़बाल किया, सलाम का जवाब दिया और मेरे ऊपर सलवात भेजी। उसने कहा:
"ऐ मुहम्मद! अपनी उम्मत को खुशख़बरी दीजिए, क्योंकि मैं उनमें से ज़्यादातर अच्छे और नेक आमाल ही देखता हूँ।"

मैंने इस नेमत पर सिर्फ़ अल्लाह का शुक्र अदा किया और कहा कि यह मेरे रब का फ़ज़्ल है।
जिब्राईल ने कहा: "अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में मलकुल-मौत सबसे ज़्यादा मेहनत करने वाला फ़रिश्ता है।"
मैंने पूछा: "क्या इज़्राईल (मलकुल-मौत) हर उस शख़्स की रूह क़ब्ज़ करता है जो मर चुका है या जो मरने वाला है?" जिब्राईल ने कहा: "हाँ, ऐसा ही है।"

फिर मैंने मलकुल-मौत से पूछा: "क्या आप लोगों को देखते हैं?"
उसने कहा: "हाँ, मैं उन्हें भी देखता हूँ और पूरी कायनात भी मेरे सामने है।"
उसने कहा: "अल्लाह तआला ने मुझे इजाज़त दी है कि मैं सब पर मुकम्मल वाक़िफ़ रहूँ। वे मेरे लिए ऐसे हैं जैसे किसी आदमी के हाथ में एक दिरहम (सिक्का) — वह जैसे चाहे उसे उलट-पलट कर देख ले। ऐसा कोई घर नहीं जिसे मैं दिन में पाँच बार न देखता हूँ। मैं हर घर वालों से कहता हूँ: 'अपने मुर्दों पर रोओ मत, मैं तुम्हारे पास बार-बार आता रहूँगा, यहाँ तक कि वह वक़्त आ जाएगा जब उस घर में कोई भी बाक़ी नहीं रहेगा।'"

मैंने जिब्राईल से पूछा: "क्या मुसीबतों और आज़माइशों वालों के लिए मौत काफ़ी है?" जिब्राईल ने जवाब दिया: "मौत के बाद आज़माइशें और बढ़ जाती हैं।"

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 322–323, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 6: हराम खाना खाने वाले लोग

हम अपने सफ़र में आगे बढ़ते रहे, यहाँ तक कि हम ऐसे लोगों के एक गिरोह तक पहुँचे जिनके हाथों में थालियाँ थीं। उन थालियों में अच्छा और बुरा—दोनों तरह का खाना मौजूद था, मगर वे लोग सिर्फ़ सड़ा हुआ और गंदा गोश्त ही खा रहे थे।

मैंने पूछा:
“ये कौन लोग हैं जो अच्छा खाना छोड़कर सिर्फ़ बदबूदार और खराब खाना खा रहे हैं?”

जिब्राईल ने जवाब दिया:
“ये तुम्हारी उम्मत के वे लोग हैं जो दुनिया में हराम खाना खाते थे।”

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 323, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 7: दुआ करने वाला फ़रिश्ता

इसके बाद मैंने एक ऐसे फ़रिश्ते को देखा जिसकी सूरत बहुत अजीब थी। उसके जिस्म का आधा हिस्सा आग का था और आधा हिस्सा बर्फ़ का। इससे भी ज़्यादा हैरत की बात यह थी कि न आग की गर्मी बर्फ़ को पिघलाती थी और न बर्फ़ की ठंडक आग को बुझाती थी।

बहुत धीमी आवाज़ में वह फ़रिश्ता कह रहा था:
“मैं उस ज़ात की हम्द करता हूँ जिसने आग की गर्मी को बर्फ़ को पिघलाने से रोका और बर्फ़ की ठंडक को आग बुझाने से रोका। ऐ अल्लाह! ऐ वह ज़ात जिसने आग और बर्फ़ के दरमियान यह हालत पैदा की! तू अपने बंदों के दिलों के दरमियान भी मोहब्बत और इत्तेहाद पैदा फ़रमा!”

मैंने जिब्राईल से इस फ़रिश्ते के बारे में पूछा।
उन्होंने कहा:
“अल्लाह तआला ने इसे ज़मीन पर रहने वाले मोमिनों के लिए नसीहत करने वाला फ़रिश्ता मुक़र्रर किया है, और यह आसमान और ज़मीन का निगहबान भी है। जब से इसे पैदा किया गया है, यह ज़मीन वालों के लिए दुआ करता आ रहा है।”

“इसी आसमान में दो और फ़रिश्ते भी हैं। उनमें से एक यूँ दुआ करता है:
‘ऐ अल्लाह! जो तेरा रास्ता अपनाकर ख़र्च करे, उस पर रहम फ़रमा।’

और दूसरा कहता है:
'ऐ अल्लाह! बख़ील और कंजूस को तबाह कर दे।'"

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 323, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 8: ग़ीबत करने वाले

फिर हम आगे बढ़े। रास्ते में हमने ऐसे लोगों का एक गिरोह देखा जिनके होंठ ऊँट के होंठों की तरह बहुत बड़े थे। उन्हें कैंचियों से काटा जा रहा था और जो गोश्त कटता, उसे ज़बरदस्ती उन्हीं के मुँह में ठूँस दिया जाता था।

मैंने पूछा:
"जिब्राईल! ये लोग कौन हैं?"

उन्होंने जवाब दिया:
"ये वे लोग हैं जो अपने मोमिन भाइयों की ग़ीबत करते थे और उनमें ऐब तलाश किया करते थे।"

फिर मैंने एक और गिरोह देखा जिनके सिर पत्थरों से कुचले जा रहे थे और उनके दिमाग़ बाहर बह रहे थे।

मैंने पूछा:
"ये कौन लोग हैं?"

जिब्राईल ने कहा:
"ये वे लोग हैं जो बिना इशा की नमाज़ पढ़े सो जाया करते थे।"

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 323–324, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 9: यतीम का माल खाने वाले और सूद लेने वाले

मैंने ऐसे लोगों का एक गिरोह देखा जिनके मुँहों में आग डाली जा रही थी और वह आग उनकी पिछली तरफ़ से निकल रही थी।

मैंने पूछा:
"ये कौन लोग हैं?"

जिब्राईल ने जवाब दिया:
“ये वे लोग हैं जो नाजायज़ तौर पर यतीमों का माल खाते थे।”

फिर मैंने एक और गिरोह देखा जिनके पेट इतने ज़्यादा फूले हुए थे कि वे खड़े तक नहीं हो पा रहे थे।

मैंने इनके बारे में पूछा तो जवाब मिला:
“ये वे लोग हैं जो सूद खाते थे। शैतान ने उन्हें धोखे में डाल दिया था और वे फ़िरऔनियों के रास्ते पर चल पड़े थे। सुबह और शाम उनके सामने आग पेश की जाती है। वे कहते हैं:
‘ऐ अल्लाह! क़ियामत कब आएगी, ताकि हमें इस ज़िंदगी से कुछ राहत मिले जो हमें कमज़ोर करती जा रही है?’”

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 324, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 10: बेहयाई करने वाली औरतें

हम अपने सफ़र में आगे बढ़े तो हमें औरतों का एक गिरोह मिला जिन्हें उनके सीने से लटका दिया गया था।

मैंने जिब्राईल से पूछा:
“ये औरतें कौन हैं?”

उन्होंने जवाब दिया:
“ये वे औरतें हैं जिन्होंने झूठ बोला और अपने शौहरों की तरफ़ ऐसे बच्चों को मंसूब किया जो उनके नहीं थे, ताकि वे उन्हें वारिस क़रार दें।”

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:
“अल्लाह के यहाँ सबसे सख़्त अज़ाब उस औरत के लिए है जो किसी ऐसे बच्चे को किसी ख़ानदान से जोड़ दे जो असल में उस ख़ानदान से नहीं, सिर्फ़ इसलिए कि वह अपने शौहर के माल पर क़ब्ज़ा कर सके।”

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 324, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 11: फ़रिश्तों की तस्बीह

हम उन लोगों से आगे बढ़े और फ़रिश्तों के एक गिरोह के पास पहुँचे, जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी मर्ज़ी से पैदा किया था। उनका पूरा वजूद अल्लाह की तस्बीह और ज़िक्र में मशग़ूल था।

वे फ़रिश्ते बुलंद आवाज़ में अल्लाह की हम्द और शुकर अदा कर रहे थे, और उसकी मोहब्बत और ख़ौफ़ से रो रहे थे।

मैंने उनके बारे में पूछा तो जिब्राईल ने कहा:
"जैसा तुम देख रहे हो, हर फ़रिश्ता दूसरे फ़रिश्ते के क़रीब खड़ा है, मगर आपस में बात नहीं करता। उनका एक ही काम है—अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल की तस्बीह और हम्द। इसी वजह से वे न ऊपर देखते हैं और न नीचे।"

मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने बिना मेरी तरफ़ देखे सिर्फ़ सिर हिलाकर जवाब दिया।
जिब्राईल ने उनसे कहा:
"यह मुहम्मद हैं—ख़ातमुन-नबिय्यीन और नबी-ए-रहमत। ये तमाम अंबिया के सरदार और पेशवा हैं। तुम उनसे कलाम क्यों नहीं करते?"

यह सुनते ही उन्होंने मुझे सलाम किया, अदब पेश किया और मुझे और मेरी उम्मत को खुशख़बरी दी।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 324, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 12: हज़रत यह्या और हज़रत ईसा

हम दूसरे आसमान की तरफ़ बढ़े। वहाँ मैंने दो ऐसे शख़्स देखे जो आपस में बहुत मिलते-जुलते थे। मैंने पूछा: "जिब्राईल! ये दोनों कौन हैं?"

उन्होंने जवाब दिया:
"ये यह्या और ईसा हैं—दोनों नबी और आपस में ख़ानदान के क़रीबी (कज़िन) हैं।"

मैंने दोनों को सलाम किया और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। उन्होंने भी मुझे सलाम किया, मेरे लिए मग़फ़िरत की दुआ की और कहा:
"ख़ुश आमदी, ऐ हमारे नेक और सालेह भाई!"

उस जगह बहुत से फ़रिश्ते भी मौजूद थे, जो आजिज़ी और ख़ुशू के साथ सज्दे में थे। अल्लाह तआला ने उन्हें मुख़्तलिफ़ सूरतों और मुख़्तलिफ़ आवाज़ों में पैदा किया था, और वे सब अल्लाह की तस्बीह और तक़दीस में मशग़ूल थे।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 325, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 13: हज़रत यूसुफ़

फिर हम तीसरे आसमान की तरफ़ गए। वहाँ मैंने एक ऐसे शख़्स को देखा जो अब तक देखे गए तमाम लोगों से ज़्यादा ख़ूबसूरत और फ़ज़ीलत वाला था। वह चौदहवीं के चाँद की तरह चमक रहा था।

मैंने पूछा: "जिब्राईल! ये कौन हैं?"
उन्होंने कहा:
"ये तुम्हारे भाई यूसुफ़ हैं।"

मैंने उन्हें सलाम किया और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। उन्होंने मेरे सलाम का जवाब दिया, मेरे लिए रहमत की दुआ की और कहा:
"ख़ुश आमदी, ऐ मेरे भाई! ऐ आला अख़लाक़ वाले नबी, जिन्हें बहुत अच्छे और मुनासिब वक़्त में भेजा गया।"

वहाँ भी फ़रिश्ते मौजूद थे, जो आजिज़ी के साथ सज्दे में और अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल थे। मुझे उनसे मिलवाया गया और उन्होंने भी बाक़ी फ़रिश्तों की तरह मेरा बहुत आदर किया।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 325, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 14: हज़रत इदरीस

इसके बाद हम चौथे आसमान की तरफ़ गए। वहाँ मैंने एक शख़्स को देखा और पूछा:
"जिब्राईल! ये कौन हैं?"

उन्होंने कहा:
"ये इदरीस हैं—जिन्हें अल्लाह तआला ने बहुत ऊँचे दर्जे तक उठा लिया।"

मैंने उन्हें सलाम किया और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। उन्होंने भी मेरे लिए दुआ की। इस आसमान में भी फ़रिश्ते मौजूद थे, जिन्होंने मुझे खुशख़बरी दी।

फिर मैंने एक और फ़रिश्ता देखा जो एक तख़्त के सहारे टेक लगाए हुए था, और उसके तहत सत्तर हज़ार फ़रिश्ते थे।
जिब्राईल ने बुलंद आवाज़ में उससे कहा:
"खड़े हो जाओ!"

वह फ़रिश्ता फ़ौरन खड़ा हो गया, और क़ियामत के दिन तक उसी हालत में खड़ा रहेगा।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 325, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 15: हज़रत हारून

हम पाँचवें आसमान पर पहुँचे। वहाँ मैंने एक बहुत लंबे क़द के बुज़ुर्ग को देखा, जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उनकी आँखें बड़ी थीं और उनकी उम्र बहुत ज़्यादा लगती थी। उनकी उम्मत उन्हें घेरे हुए थी।

मैंने पूछा:
"जिब्राईल! ये कौन हैं?"

उन्होंने कहा:
"ये हारून बिन इमरान हैं—वही जिनसे उनकी क़ौम राज़ी थी।"

मैंने उन्हें सलाम किया और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। उन्होंने भी मुझे सलाम किया और मेरे लिए मग़फ़िरत की दुआ की।

इस आसमान में भी फ़रिश्ते पूरी आजिज़ी और ख़ुशू के साथ अल्लाह की हम्द और तस्बीह में मशग़ूल थे।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 325, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 16: बहुत लंबे आदमी का ज़िक्र

हम ऊँचे आसमान की तरफ़ बढ़ते रहे। छठे आसमान में मैंने एक बहुत ही लंबे क़द के आदमी को देखा, जिसका जिस्म बालों से भरा हुआ था—यहाँ तक कि अगर वह कमीज़ पहनता, तो बाल कमीज़ से बाहर निकल आते।

उस आदमी ने कहा:
"बनी इसराईल कहते हैं कि अल्लाह तआला के नज़दीक मैं इस्लाम की औलाद में सबसे बेहतर हूँ, मगर यह शख़्स—इस्लाम के अज़ीम नबी ﷺ—अल्लाह तआला के नज़दीक मुझसे कहीं ज़्यादा बेहतर और अफ़ज़ल हैं।"

मैंने उन्हें सलाम किया और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। उन्होंने मेरे सलाम का जवाब दिया और मेरे लिए मग़फ़िरत की दुआ की।

इस मुक़ाम पर भी फ़रिश्ते पूरी आजिज़ी और ख़ुशू के साथ अल्लाह तआला की तस्बीह और हम्द में मशग़ूल थे, जैसे इससे पहले के आसमानों में थे।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 326, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 17: हिजामा (Cupping) का हुक्म

इसके बाद हम सातवें आसमान पर पहुँचे। यहाँ जिस भी फ़रिश्ते से हमारी मुलाक़ात हुई, वह मुझसे कहता था:
"हिजामा करवाइए और अपनी उम्मत को भी इसका हुक्म दीजिए।"

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 326, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 18: हज़रत इब्राहीम

फिर हम एक ऐसे शख़्स के पास पहुँचे जिनके बाल काले और सफ़ेद—दोनों रंगों के मिले-जुले थे।
मैंने जिब्राईल से पूछा:
"अल्लाह के क़रीब, बैतुल-मआमूर के दरवाज़े पर बैठे हुए ये कौन हैं?" 6

जिब्राईल ने जवाब दिया:
"ये तुम्हारे वालिद, हज़रत इब्राहीम हैं। तुम्हारा घर भी यहीं है और तुम्हारी उम्मत में से परहेज़गार लोगों का एक गिरोह भी यहीं रहेगा।"

उस वक़्त मैंने क़ुरआन की यह आयत पढ़ी:

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۗ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
"बेशक इब्राहीम से सबसे ज़्यादा क़रीबी रिश्ता उन्हीं लोगों का है जिन्होंने उनका अनुसरण किया, और यह नबी (मुहम्मद ﷺ) और वे लोग जो ईमान लाए। और अल्लाह मोमिनों का कारसाज़ है।" 7

मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने जवाब दिया और कहा:
"ख़ुश आमदी, ऐ नबी! और ऐ नेक औलाद, जिसे बहुत अच्छे वक़्त में चुना गया।"

यहाँ भी फ़रिश्ते पूरी आजिज़ी और ख़ुशू के साथ मौजूद थे। उन्होंने मुझे और मेरी उम्मत को भलाई और नेकी की खुशख़बरी दी।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 326, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 19: नूर और तारीकी की नदियाँ

सातवें आसमान में मैंने नूर की नदियाँ देखीं—ऐसी कि उनसे निकलने वाली रौशनी आँखों को चौंधिया देती थी। वहाँ तारीकी की नदियाँ भी थीं, जो बर्फ़ से ढकी हुई थीं और जिनसे गरजने जैसी आवाज़ें आ रही थीं।

मैं इन नदियों को देख ही रहा था कि जिब्राईल ने मुझसे कहा:
"ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआला का शुक्र अदा कीजिए उन नेमतों और इनायतों पर जो उसने आपके लिए ख़ास की हैं।"

मैंने दुआ की:
"ऐ अल्लाह! अपनी क़ुदरत और जलाल के वसीले से मेरे ईमान को क़ायम रख।"

फिर मैंने जिब्राईल से कहा:
"यह कितना ख़ूबसूरत और हैरतअंगेज़ मंज़र है!"

उन्होंने जवाब दिया:
"यह तुम्हारे रब की मख़लूक़ात का सिर्फ़ एक हिस्सा है—उस ख़ालिक़ की मख़लूक़ात जिसने हर चीज़ पैदा की है। इनमें से कुछ तुमने देख ली हैं और कुछ अभी तुमने देखी ही नहीं हैं।"

जिब्राईल ने आगे कहा:
"अल्लाह और उसकी मख़लूक़ के दरमियान नब्बे हज़ार परदे हैं। अल्लाह के सबसे क़रीबी फ़रिश्ते इस्राफ़ील और मैं हूँ, और हमारे और अल्लाह के दरमियान चार परदे हैं: नूर, तारीकी, बादल और पानी।"

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 326–327, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 20: एक अजीब मख़लूक़

मे'राज के दौरान जो सबसे ज़्यादा हैरतअंगेज़ मख़लूक़ मैंने देखी, वह एक ऐसी हस्ती थी जिसके पाँव सातवीं ज़मीन पर थे और उसका जिस्म ऊपर की तरफ़ बढ़ता चला गया—यहाँ तक कि उसका सिर अर्श-ए-अज़ीम के नीचे था, अल्लाह तआला के हुक्म के तहत।

इसी तरह मैंने एक और फ़रिश्ता देखा, जिसके पाँव सातवीं ज़मीन पर थे और उसका जिस्म ऊपर की तरफ़ बढ़ता चला गया, यहाँ तक कि उसका सिर अर्श तक पहुँच गया।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 327, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 21: परों वाले फ़रिश्ते

हम आगे बढ़ते रहे यहाँ तक कि सातवें आसमान के आख़िरी सिरे तक पहुँच गए। वहीं हमें अर्श-ए-इलाही का मुशाहिदा हुआ। यहाँ मैंने एक ऐसे फ़रिश्ते को देखा जो अल्लाह तआला की इस तरह तस्बीह कर रहा था:

سبحان ربي حيث ما كنت لا تدري أين ربُك من العظيم شأنه

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
"जहाँ कहीं भी मैं हूँ, मेरा रब पाक है। उसकी अज़मत के सबब तुम यह नहीं जान सकते कि तुम्हारा रब कहाँ है।"

उस फ़रिश्ते के दो बड़े-बड़े पर थे—अगर वह उन्हें फैला देता, तो मशरिक़ से मग़रिब तक पूरी कायनात ढक जाती। हर सुबह वह अपने पर खोलता, किसी चीज़ का सहारा लेकर खड़ा होता और इस तरह पुकारता:

سبحان الله الملك القدُّوس

سبحان الله الكبير المتعال

لا إله إلا الله الحيّ القيوم

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
"पाक है अल्लाह, बादशाह, बहुत पाक।

पाक है अल्लाह, बहुत बड़ा, बहुत बुलंद।
अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं—वह ज़िंदा है और सबको क़ायम रखने वाला है।"

जब यह फ़रिश्ता यह तस्बीह पढ़ता, तो ज़मीन पर मौजूद तमाम मोर अल्लाह की तस्बीह करने लगते और अदब में अपने पर फैला देते।
और जब यह फ़रिश्ता ख़ामोश हो जाता, तो ज़मीन के मोर भी ख़ामोश हो जाते।

उस फ़रिश्ते के बाल हरे और पर सफ़ेद थे—इतने सफ़ेद कि वैसी सफ़ेदी किसी ने पहले कभी नहीं देखी थी। उन हरे बालों के नीचे सफ़ेद पर थे, जो बेहद ख़ूबसूरत थे—और वह हरा रंग भी ऐसा था जो पहले कभी नहीं देखा गया था।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 327, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 22: बैतुल-मआमूर

जिब्राईल के साथ हम बैतुल-मआमूर में दाख़िल हुए। मेरे साथ मेरे कुछ साथी भी थे, जिनमें से कुछ नए कपड़े पहने हुए थे और कुछ पुराने कपड़ों में थे। जिन लोगों ने पुराने कपड़े पहन रखे थे, उन्हें दाख़िल होने से रोक दिया गया। सिर्फ़ वही लोग मेरे साथ अंदर जा सके जिन्होंने नए कपड़े पहने थे।

वहाँ मैंने दो रकअत नमाज़ अदा की और फिर बाहर आया।

मेरे सामने दो नदियाँ गुज़रीं—एक 'कौसर' और दूसरी 'रहमत' की नदी। मैंने कौसर की नदी से पानी पिया और रहमत की नदी से ग़ुस्ल किया। फिर मुझे जन्नत में दाख़िल होने की हिदायत दी गई।

जन्नत के एक हिस्से में मैंने अपना घर और अपनी बीवी का घर देखा। जन्नत की मिट्टी से कस्तूरी और अंबर की खुशबू आ रही थी। जन्नत की नदियों में मैंने अल्लाह की एक कनीज़ को नहाते हुए देखा।

मैंने उससे पूछा:
"ऐ अल्लाह की बंदी! तुम किसके लिए हो?"

उसने जवाब दिया:
"मैं ज़ैद बिन हारिस के लिए हूँ।"

जब बाद में मेरी मुलाक़ात ज़ैद से हुई, तो मैंने उसे इसकी खुशख़बरी दी।

जन्नत के परिंदे ख़ुरासान के ऊँटों जितने बड़े थे। दरख़्तों पर लगे अनार इतने बड़े, चमकदार और बेमिसाल थे कि उनकी मिसाल नहीं मिलती। वहीं मैंने एक बहुत बड़ा दरख़्त देखा—अगर कोई परिंदा सात सौ साल तक उसके चारों तरफ़ उड़ता रहे, तब भी उसका पूरा चक्कर न लगा पाए।

जन्नत में ऐसा कोई घर नहीं जिसमें उस दरख़्त की कोई न कोई शाख़ा न हो।

मैंने जिब्राईल से इस दरख़्त के बारे में पूछा। उन्होंने कहा:
"यह 'तूबा' का दरख़्त है, जिसके बारे में अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है:

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ

'जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल किए, उनके लिए तूबा है और बहुत अच्छा अंजाम है।' 8"

यह दरख़्त जन्नत में है और वहाँ के तमाम घर इसी की छाया में हैं।

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 327–328, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 23: सिदरतुल-मुन्तहा पर

हम उस मुक़ाम पर पहुँचे जिसे 'सिदरतुल-मुन्तहा' कहा जाता है। वहाँ हमने एक ऐसा दरख़्त देखा जिसकी एक पत्ती पूरी एक उम्मत को ढक सकती थी।

फिर हम उस मुक़ाम तक पहुँचे जिसके बारे में क़ुरआन में आया है:
"...तो वह दो कमानों के फ़ासले जितना, बल्कि उससे भी ज़्यादा क़रीब हो गया।" 9

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ

"रसूल उस पर ईमान लाया जो उसके रब की तरफ़ से उस पर नाज़िल किया गया।"

मैंने अपनी और अपनी उम्मत की तरफ़ से जवाब दिया:

وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ

"और मोमिन भी—सब अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए।"

وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ

“और उन्होंने कहा: हमने सुना और माना। ऐ हमारे रब! हम तेरी मग़फ़िरत चाहते हैं और तेरी ही तरफ़ लौटना है।”

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ

“अल्लाह किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता।”

मैंने अर्ज़ किया:

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ

अल्लाह ने फ़रमाया:

لا أُؤاخذك

“मैं तुम्हें नहीं पकड़ूँगा।”

फिर मैंने कहा:

رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا

अल्लाह ने फ़रमाया:

لا أحملك

“मैं तुम पर बोझ नहीं डालूँगा।”

फिर मैंने पूरी दुआ पढ़ी:

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا . . . فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
“ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमारी ताक़त से बाहर हो… तू ही हमारा मालिक है, पस हमें काफ़िर क़ौम पर मदद फ़रमा।” 11

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

قد أعطيتك ذلك لك ولأمتك

"मैंने यह तुम्हें और तुम्हारी उम्मत को अता कर दिया।"

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 328–329, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 24: इमाम जाफ़र सादिक़ का बयान

इमाम जाफ़र अस्सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:
"इस्लाम के नबी ﷺ से ज़्यादा किसी ने भी अल्लाह की इतनी क़ुर्बत का शरफ़ हासिल नहीं किया।"

नबी-ए-इस्लाम ﷺ ने अल्लाह तआला से अपनी उम्मत के लिए अर्ज़ की:
"ऐ अल्लाह! जो ख़ुसूसियात तूने अपने अंबिया को अता की हैं, वही मुझे भी अता फ़रमा।"

अल्लाह ने फ़रमाया:
"मैं तुम्हें दो दुआएँ अता करता हूँ जो मेरे अर्श के नीचे हैं:"

لاحول ولاقوة إلا بالله

لامنجا منك إلا إليك

"अल्लाह के सिवा न कोई ताक़त है न क़ुव्वत, और तुझसे बचने की कोई जगह नहीं सिवा तेरी ही तरफ़ लौटने के।"

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 329, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 25: दुआ

मे'राज के दौरान एक फ़रिश्ते ने मुझे यह दुआ सिखाई और हुक्म दिया कि इसे सुबह और शाम पढ़ा करूँ:

اللهم إن ظلمي أصبح مستجيراً بعفوك

وذَنبي مستجيراً بمغفرتك

وذلي مستجيراً بوجهك الباقي الذي لا يفنى

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
“ऐ अल्लाह! मेरा ज़ुल्म तेरे अफ़्व के साए में पनाह चाहता है,
मेरा गुनाह तेरी मग़फ़िरत के सहारे में पनाह चाहता है,
और मेरी बेबसी तेरे उस बाक़ी रहने वाले चेहरे के साए में पनाह चाहती है जो कभी फ़ना नहीं होगा।”

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 329–330, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 26: अज़ान

इसके बाद मैंने अज़ान की आवाज़ सुनी। आसमानों में एक फ़रिश्ता अज़ान दे रहा था। इससे पहले मैंने कभी आसमानों से अज़ान की आवाज़ नहीं सुनी थी। जब उसने कहा:

الله أكبر الله أكبر

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
“अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।”

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:
“मेरे बंदे ने सच कहा। मैं ही सबसे बड़ा हूँ।”

फिर फ़रिश्ते ने कहा:

أشهد أن لا إله إلا الله أشهد أن لا إله إلا الله

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
“मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।”

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:
“मेरे बंदे ने सच कहा। मेरे सिवा कोई माबूद नहीं।”

फिर यह कलिमात सुनाई दिए:

أشهد أن محمد رسول الله أشهد أن محمد رسول الله

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
“मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।”

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:
“मेरे बंदे ने सच कहा। मुहम्मद मेरे बंदे और मेरे रसूल हैं। मैंने उन्हें नबी मुक़र्रर किया है।”

फिर मुअज़्ज़िन ने कहा:

حيَّ على الصلاة حيَّ على الصلاة

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
“नमाज़ की तरफ़ आओ, नमाज़ की तरफ़ आओ।”

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:
“मेरे बंदे ने सच कहा। उसने लोगों को मेरी इबादत की तरफ़ बुलाया। जो शख़्स पूरी मोहब्बत और जवाबदेही के साथ नमाज़ की तरफ़ आएगा, उसकी नमाज़ उसके पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाएगी।”

फिर मुअज़्ज़िन ने कहा:

حيَّ على الفلاح حيَّ على الفلاح

(तर्जुमा—उर्दू/हिंदी लिपि):
“कामयाबी की तरफ़ आओ, कामयाबी की तरफ़ आओ।”

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:
“नमाज़ मेरे बंदों की कामयाबी का ज़रिया है। नमाज़ ही कामयाबी, निजात और सच्चाई की कुंजी है।” 12

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 330, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 27: नमाज़

यहाँ मैंने जन्नत के फ़रिश्तों की इमामत करते हुए नमाज़ अदा की—जैसे बैतुल मुक़द्दस में मैंने पिछले अंबिया की इमामत की थी।

जब मैं सज्दे में गया, तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया:
"तुमसे पहले आने वाले अंबिया पर मैंने हर दिन पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की थीं, और तुम पर और तुम्हारी उम्मत पर भी पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं।"

नमाज़ के बाद मैं वापस लौटा। रास्ते में मेरी मुलाक़ात हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह से हुई। उन्होंने मुझसे कोई सवाल नहीं किया।

फिर मेरी मुलाक़ात हज़रत मूसा बिन इमरान से हुई। उन्होंने पूछा:
"ऐ मुहम्मद! तुम्हारे रब ने क्या हुक्म दिया?"

मैंने कहा:
"मेरे रब ने मुझ पर और मेरी उम्मत पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं।"

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा:
"ऐ मुहम्मद! तुम्हारी उम्मत आख़िरी उम्मत है और तमाम उम्मतों में सबसे कमज़ोर है। अल्लाह के हुक्म का पालन ज़रूरी है, मगर तुम्हारी उम्मत पचास नमाज़ें अदा करने की ताक़त नहीं रखती। अपने रब के पास लौट जाओ और कमी की दरख़्वास्त करो।"

मैं सिदरतुल-मुन्तहा की तरफ़ लौटा और सज्दे में गिर पड़ा। मैंने अर्ज़ किया:
"ऐ अल्लाह! तूने मुझ पर और मेरी उम्मत पर पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, मगर हम इसकी ताक़त नहीं रखते। अपनी बारगाह से कमी की दरख़्वास्त करता हूँ।"

अल्लाह तआला ने दस नमाज़ें कम कर दीं।

मैं वापस लौटा और हज़रत मूसा को बताया। उन्होंने कहा:
"फिर लौट जाओ, वे अब भी इसे सहन नहीं कर पाएँगे।"

मैं बार-बार लौटता रहा और हर बार दस-दस नमाज़ें कम होती रहीं। आख़िरकार जब पाँच नमाज़ें बाक़ी रह गईं, हज़रत मूसा ने फिर कहा:
"तुम्हारी उम्मत पाँच नमाज़ें भी ठीक से अदा नहीं कर पाएगी।"

मैंने कहा:
“अब मुझे अपने रब के पास लौटते हुए शर्म आती है। मैं इन्हीं पाँच नमाज़ों पर सब्र करता हूँ।”

तभी एक आवाज़ आई:
“तुम्हारे सब्र की वजह से ये पाँच नमाज़ें पचास के बराबर कर दी गई हैं। हर एक नमाज़ दस नमाज़ों के बराबर होगी। अगर तुम्हारी उम्मत का कोई शख़्स एक नेकी करेगा, तो उसके लिए दस नेकियाँ लिखी जाएँगी, और अगर एक गुनाह करेगा, तो सिर्फ़ वही एक गुनाह लिखा जाएगा।”

इमाम जाफ़र अस्सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:
“अल्लाह हज़रत मूसा को अज्र-ए-अज़ीम अता फ़रमाए, उन्हीं की वजह से रोज़ाना की नमाज़ें पाँच कर दी गईं।”

(बिहारुल-अनवार, जिल्द 18, सफ़्हा 330–331, बाब 3, हदीस 34)

हदीस नं. 28: मे‘राज से वापसी

शैख़ सदूक़ की किताब **‘अमाली’** में रिवायत है कि इमाम जाफ़र अस्सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

“जब नबी ﷺ जिब्राईल के साथ बुराक़ पर सवार हुए—जो जन्नत के घोड़ों में से एक था—तो सबसे पहले बैतुल मुक़द्दस पहुँचे। वहाँ पिछले अंबिया का मेहराब नबी ﷺ को दिखाया गया और आपने वहाँ भी नमाज़ अदा की।

मे‘राज के बाद नबी ﷺ फिर बैतुल मुक़द्दस लौटे और वहाँ क़ुरैश के एक क़ाफ़िले से मुलाक़ात हुई, जिसका एक ऊँट खो गया था और वे उसकी तलाश में थे।

नबी ﷺ ने उनसे पानी माँगा, कुछ पानी पिया और बाक़ी ज़मीन पर बहा दिया। फिर आप मक्का वापस लौट आए।

सुबह होते ही आपने क़ुरैश से कहा:
‘रात के वक़्त अल्लाह मुझे बैतुल मुक़द्दस ले गया। वहाँ उसने मुझे पिछले अंबिया के निशानात और उनके घर दिखाए। वापसी में मैं क़ुरैश के उस क़ाफ़िले से मिला जिसका एक ऊँट खो गया था। मैंने उनसे पानी माँगा, कुछ पिया और बाक़ी ज़मीन पर बहा दिया।’”

अबू जहल (ल) ने कहा:
“इससे पूछो कि बैतुल मुक़द्दस में कितने सुतून, कितनी रौशनियाँ और कितने मेहराब हैं।”

उसी वक़्त जिब्राईल नबी ﷺ के पास आए और बैतुल मुक़द्दस की पूरी सूरत आपके सामने रख दी, जिससे आप हर सवाल का जवाब देते चले गए।

क़ुरैश ने कहा:
"चलो, क़ाफ़िले के लौटने का इंतज़ार करते हैं।"

नबी ﷺ ने फ़रमाया:
"क़ाफ़िला सूरज निकलते वक़्त मक्का में दाख़िल होगा, और उसके आगे एक बहुत ख़ूबसूरत ऊँट होगा।"

जब सुबह हुई और सूरज निकलने ही वाला था, लोगों ने कहा:
"सूरज निकल रहा है, मगर क़ाफ़िला अभी तक नहीं आया!"

इतने में क़ाफ़िला नज़र आया—और सबसे आगे वही ख़ूबसूरत ऊँट था, जैसा नबी ﷺ ने बताया था। 13

हदीस नं. 29: मे'राज में हज़रत अली की आवाज़

किताब **कश्फ़ुल-ग़ुम्मह** में अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि उन्होंने कहा:

"मैंने किसी को नबी ﷺ से पूछते सुना:
'मे'राज की रात अल्लाह तआला ने आपसे किस आवाज़ में कलाम किया?'"

नबी ﷺ ने फ़रमाया:
"मेरे रब ने मुझसे अली बिन अबी तालिब अलैहिस्सलाम की आवाज़ में कलाम किया और फ़रमाया:
'ऐ अहमद! मैं ऐसी ज़ात हूँ जिसकी किसी से मिसाल नहीं दी जा सकती। मैं हर चीज़ के राज़ जानता हूँ जो तुम्हारे दिल में हैं। अली बिन अबी तालिब के सिवा तुम्हारा कोई और क़रीबी दोस्त नहीं है। इसी वजह से मैं तुमसे अली बिन अबी तालिब की आवाज़ में बात करता हूँ, ताकि तुम्हारा दिल सुकून पाए।'"

(कश्फ़ुल-ग़ुम्मह, जिल्द 1, सफ़्हा 106)